स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग / दिनांक - 23-4-20
द्वितीय सेमेस्टर /

31
3 4 5 6 7 8 9
10 11 12 13 14 15 16
17 18 19 20 21 22 23
24 25 26 27 28 29 30
M T W T F S S
14 MAR

MONDAY FEBRUARY 17

I

- 23-4-2020

भ्रमरगीतसार - सूरदास - परिचय

भक्तिकाल के चार महान कवियों में सूरदास का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन पंक्तियों में भक्तिकालीन कवियों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है —

"सूर सूर्य तुलसी ससि, उडुगन केशवदास।
अबके कवि खद्योत सम, जँह-तँह करत प्रकाश॥

इस कथन का अर्थ है कि सूरदास जी काव्य जगत में सूर्य के समान प्रकाशवान हैं और तुलसीदास चन्द्रमा के समान शीतलता प्रदान करनेवाले हैं परंतु बाद के कवि तो मात्र खद्योत के समान हैं जो सीमित लघु क्षेत्र में ही प्रकाश बिखेरते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि सूरदास जी का महत्व सर्वोपरि है।

विद्यार्थियों आपलोगों ने अबतक मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' में वर्णित नागमती वियोग वर्णन के बारे में सुना और जाना। आगे हमलोग सूर्य

के समान प्रकाशवान सूरदास की अमर काव्य कृति 'सूरसागर' का अंश 'भ्रमरगीत' का अध्ययन करने जा रहे हैं। संग्रह का नाम है 'भ्रमरगीत-सार' अर्थात भ्रमरगीत उपखण्ड का जो मूल अंश है उसी का अध्ययन करना है।

इसमें एक शब्द महत्वपूर्ण है, वह है 'भ्रमर' अर्थात भौंरा। भ्रमर या भौंरा नामक जन्तु की चर्चा यहाँ क्यों की जा रही है, मैं आपलोगों को ये बता दूँ कि भौंरा एक ऐसा जन्तु है जो फूलों पर मंडराया करता है और उसका स्वभाव है कि एक फूल पर वह बैठता है, उसका रस चूसता है और उड़कर अगले फूल पर चला जाता है और मुड़कर पीछे की ओर देखता भी नहीं है। अर्थात वह छलिया है और हमेशा छल के सहारे फूलों को चूसता रहता है।

आज मैं ये बता दूँ कि सूरदास ने इस जीव को अपने काव्य में स्थान क्यों दिया है। तो मैं ये बता दूँ कि स्वभाव और स्वरूप के आधार पर वह भगवान श्रीकृष्ण का द्योतक है। विस्तार से समझा दूँ कि भौंरे का स्वभाव है छल करना और श्रीकृष्ण ने भी गोपियों के साथ छल किया था। जैसे भौंरा एक फूल से दूसरे फूल पर चला जाता है वैसे ही श्रीकृष्ण भी गोकुल की गोपियों से प्रेम करके मथुरा चले गये और कभी लौट कर वापस नहीं आये गोपियों की सुध लेने। अर्थात उन्होंने भी गोपियों से भौंरे की तरह ही छल किया था।

दूसरा पक्ष है स्वरूप का — कृष्ण का रंग काला है और भौंरे का रंग भी काला है। श्रीकृष्ण का वस्त्र पीला है और भौंरे का

20 THURSDAY FEBRUARY

4

के पंखरंग भी पीले हैं। श्रीकृष्ण के होंठ लाल हैं और भौंरे का मुँह भी लाल है।

इस तरह की समानता के कारण हम कह सकते हैं कि 'भ्रमर गीत' नाम का भावार्थ है श्रीकृष्ण का गीत। इस प्रकार आज हम लोगों ने 'भ्रमरगीत' के नामकरण पर विचार किया है। अगले दिन हम लोग उस कथा की चर्चा करेंगे जिसका उल्लेख इस काव्य में किया गया है, साथ ही कल यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि इस कथा-सूत्र का आधार क्या है, अर्थात सूरदास जी ने इस कथा की कल्पना की थी, या पहले भी इस कथा का उल्लेख मिलता है।

कुमार रजनीकान्त रंजन

23-4-2020